ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23040
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23040

CONFERENCE PAPER

आधुनिक समय में संगीत क्षेत्र में महिला कलाकार

डॉ सीमा जैन

1. **अतिथि संकाय, संगीत विभाग, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर**

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Abstract

प्रकृति का रचयिता ईश्वर है परन्तु ईश्वर स्वयं स्त्री के बिना पूर्ण है। गर शिव है तो गौरी होगी, गर विष्णु है तो लक्ष्मी होगी, गर ब्रह्मा है तो सरस्वती होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि नारी और पुरुष मिल कर ही एक दूसरे को परिपूर्ण करते हैं और आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो नारी हर क्षेत्र में पुरुष को पूर्णता प्रदान करती है। आज हर क्षेत्र में सशक्त है नारी, हर युद्ध में लड़ने को प्रशस्त है नारी। कला, संगीत, व्यवसाय हो या रक्षा, ये किसने कह दिया कि अशक्त है नारी। वादिका, गायिका, नर्तकी हो या फौजी, ग़ौर से देखो तो ये समस्त है नारी। (मेरे जीवनसाथी द्वारा रचित) नारी सृजन की शक्ति है और संगीत भावनाओं की भाषा है। नारी माँ के रूप में जीवन देती है और अपने अन्दर प्रेम, करुणा और संवेदनशीलता का अथाह समन्दर समेटे रहती है। उसकी भावनाएँ संगीत की तरह कोमल और गहरी होती हैं।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Introduction:-

अगर हम ग़ौर से देखें तो प्रकृति संगीत को जन्म देती है। संगीत भावनाओं को अभिव्यक्त करता है और नारी उन भावनाओं को जीवन में ढालती है। इतना सब होने के बाद भी नारी को आज भी हर क्षेत्र में संघर्ष एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। समय के बदलाव के साथ संगीत उद्योग में भी बदलाव हुआ एवं साथ ही साथ विस्तार भी हुआ है। इसमें अनेक प्रकार की भूमिकाएँ विकसित हुई हैं। आज के वैज्ञानिक युग में संगीत कला स्वर चिकित्सा, आयुर्वेद, मनोविज्ञान, वनस्पति शास्त्र एवं उद्योगों के विस्तृत क्षेत्र तक पहुँच चुकी है एवं इन क्षेत्रों में विस्तृत रूप देने का कार्य कई संगीतज्ञों, मनोवैज्ञानिकों आदि गुणीजनों द्वारा किया गया है। जहाँ कुछ दशकों पहले संगीत जगत में पुरूषों का वर्चस्व सर्वाधिक था,

Corresponding Author:- डॉ सीमा जैन
Address:- अतिथि संकाय, संगीत विभाग, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

वहीं आज महिलाएँ भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। वे केवल गायिका ही नहीं, बल्कि संगीतकार, गीतकार, वादिका, संगीत निर्देशिका, निर्माता, तकनीकी विशेषज्ञ और प्रबंधक के रूप में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं। हालांकि इस क्षेत्र में महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। इसी संदर्भ में हम संगीत उद्योग में महिलाओं की भागीदारी, उनके योगदान, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं जैसे बिन्दुओं पर नज़र डालेंगे-

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य- प्राचीन काल से ही संगीत में महिलाओं का योगदान रहा है। भारत में देवदासी परम्परा, लोकगीत एवं शास्त्रीय संगीत में महिला कलाकारों का अतुलनीय योगदान रहा है। प्राचीन समय में महिलाएँ केवल या तो कोठों की रौनक होती थी या राजा-महाराजाओं के दरबारों की शान होती थी। परन्तु समय के साथ परिवर्तन से संगीत, कोठों और महलों से निकल कर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों तक आ गया। हालांकि समाज की रूढ़िवादी सोच के कारण उन्हें अक्सर सीमित अवसर ही मिला करते थे। आधुनिक युग में धीरे-धीरे महिला शिक्षा एवं स्वतंत्रता की वजह से सोच का दायरा बढ़ा एवं उनकी संगीत में भागीदारी में भी वृद्धि हुई।

आधुनिक समय में संगीत में महिलाओं की भूमिका- आधुनिक समय में संगीत के हर क्षेत्र में महिलाएँ सक्रिय हैं। महिलाओं ने संगीत उद्योग को विविधता और संवेदनशीलता प्रदान की है। उन्होंने नये संगीत प्रयोगों और शैलियों को जन्म दिया है।

गायिका- एक बालक जब पैदा होता है या यूं कहें कि अपनी माँ की कोख में होता है तो जो पहली आवाज वो सुनता है, वो आवाज उसकी माँ की होती है। व्यक्ति जन्म से ही माँ रूपी महिला की आवाज में लोरियाँ और उससे की गई बातें और गीत सुन कर ही बड़ा होता है। कई महिला कलाकारों ने अपने गीतों के माध्यम से लैंगिक समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों को उठाया है। महिला गायिकाएँ शास्त्रीय, लोक, फिल्मी संगीत, पॉप, रॉक, हर तरह की भूमिकाएं निभा रही हैं। उनकी आवाज़ और शैली ने संगीत को नई पहचान दी है। वे एकल गायन, समूह गायन सभी में अपना भरपूर योगदान देती है। सर्वप्रथम नाम मीराबाई का आता है जिन्होंने भक्ति संगीत के माध्यम से अपनी पहचान बनाई। हमारे फिल्मी संगीत की पुरानी गायिकाओं में महान गायिका लता मंगेशकर, आशा भोंसले, सुरैया, शमशाद बेगम, परवीन सुल्ताना, गीता दत्ता, नूरजहाँ, सुधा मल्होत्रा, आरती मुखर्जी, सुमन कल्याणपुर, राजकुमारी एवं नई गायिकाओं में सर्वप्रथम श्रेया घोषाल का नाम आता है जिन्होंने अपनी सुरीली आवाज एवं गायकी से सभी को मंत्रमुग्ध कर रखा है। इनके अलावा सुनिधि चौहान, पलक मुच्छाल, शिल्पा राव, सूफी गायिका हर्षदीप कौर, मोनाली ठाकुर, नीति मोहन आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनके अलावा और भी कई महिला कलाकार हैं जिन्होंने संगीत की दुनिया में अपना नाम किया था और कर रही है। इनके अलावा शास्त्रीय संगीत जगत में किशोरी अमोनकर, एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी, बेगम अख्तर, प्रभा आत्रे, केसर बाई केलकर आदि और भी कई दिग्गज कलाकारों के नाम प्रसिद्ध हैं । भारत में महिला गायिकाओं ने, शास्त्रीय संगीत, बॉलीवुड, स्वतंत्र संगीत एवं लाइव परफोरमेन्स, आदि और भी विधाएँ हैं जिन पर सबसे अधिक प्रभाव डाला है।

संगीतकार/गीतकार- आज कई महिला कलाकार केवल गायन तक ही सीमित नहीं हैं। वे संगीत रचना एवं गीत लेखन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। गीतकार के रूप में महिलाएँ अपने अनुभवों और सामाजिक विचारों को शब्दों में पिरोती हैं। उनके गीतों में अक्सर प्रेम, संघर्ष, संवेदनशीलता एवं समाज की सच्चाई दिखाई देती है। उन्हीं गीतों को महिला संगीतकार धुन देती हैं एवं गीतों के बोलों के अनुसार धुन बना कर खूबसूरत गीत तैयार कती हैं। महिला संगीतकारों में सरस्वती देवी का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। उनके बाद उषा खन्ना, लता मंगेशकर (आनंद घन के नाम से मराठी फिल्मों में संगीत दिया), स्नेहा खानवलकर और गीतकारों में माया गोविन्द, कौसर मुनीर, रानी मलिक, सरोज मोहिनी नैयर, अमृता प्रीतम एवं वर्तमान में गरिमा वहाल, अभिरुचि चंद और सीमा सैनी भी सक्रिय महिला गीतकार हैं।

वादिका- महिलाओं की भागीदारी वादिका के रूप में भी अग्रणी स्थान पर रही हैं। महिलाएँ तबला, सितार, गिटार, पियानों आदि बजाने में भी अग्रणी रही हैं। प्रमुख महिला वादकों में डॉ अपान मित्रा, अनुराधा पाल, डॉ योगमाया शुक्ला, नीलिमा भूमकर, श्रेया भिलाटे, तनुजा घड़ीगाँवकर, प्रेरणा मुंडे (तबला/पखावज), सितार में अन्नपूर्णा जी, अनुष्का शंकर, ज़रीना बेगम, वायलिन में मन राजम, कला रामनाथ, सरस्वती वीणा में वीणा धनम्मल, इमानी शंकर शास्त्री (इलेक्ट्रिक वीणा) का नाम उल्लेखनीय है।

संगीत निर्माता एवं निर्देशक - संगीत उद्योग में संगीत निर्माण एवं निर्देशन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वे पूरे गीत या संगीत परियोजना की योजना बनाते हैं, कलाकरों का चयन करते हैं एवं अन्तिम प्रस्तुति को तैयार करते हैं। कई महिलाएँ संगीत निर्माण, रिकार्डिंग और तकनीकी पहलुओं को संभालती हैं। वे स्टूडियो में संगीत तैयार करने और कलाकारों को मार्गदर्शन देने का काम करती है। फिल्मों एवं एल्बम के लिये पूरे संगीत प्रोजेक्ट का निर्देशन करने में भी महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। महिला संगीत निर्माता एवं निर्देशक में सरस्वती देवी, उषा खन्ना, जसलीन रॉयल, अलकनंदा दासगुप्ता, रचिता अरोड़ा, सनाया अर्देशिर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। फिल्म निर्माता में दीपा मेहता का नाम अग्रणी है, जिन्होंने फिल्मों के माध्यम से सामाजिक मुद्दों को उठाया।

इनके अलावा महिलाएँ साउंड इंजिनियर, संगीत शिक्षिका, मंच प्रस्तोता/परफोर्मर, मिक्सिंग इंजिनियर, रिकॉर्डिंग विशेषज्ञ और प्रोडक्शन टीम का भी हिस्सा होती हैं। संगीत उद्योग केवल कलाकारों तक ही सीमित नहीं है वे तकनीकी क्षेत्र में भी अग्रणी स्थान पर हैं। उनकी तकनीकी दक्षता के कारण संगीत की गुणवत्ता और प्रस्तुति में निरन्तर सुधार हो रहा है।

महिलाएँ अपनी संगठन क्षमता, संचार कौशल और सचनात्मक सोच के कारण इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। संगीत कार्यक्रमों कॉन्सर्ट और प्रचार अभियानों को सफल बनाने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। वे कलाकार, प्रबंधन, इवेन्ट आयोजन, पब्लिक रिलेशन विशेषज्ञ और मार्केटिंग प्रोफेशनल के रूप में कार्य कर रही हैं। इन्टरनेट एवं डिजीटल तकनीक के विकास ने संगीत उद्योग को पूरी तरह से बदल दिया है। महिलाएँ यूट्यूब, स्पॉटीफाई, इन्स्टाग्राम और अन्य डिजिटल प्लैटफॉर्म के माध्यम से अपना संगीत सीधे रसिक श्रोताओं तक पहुँचा रही हैं। इससे उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने और अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने का अवसर मिला है।

वो सुर सम्राज्ञी दुनिया की,

जो गीतकार हो सरोजिनी सी,

वो वादन में हैं अन्नपूर्णा जी,

इन सब पर कृपा सरस्वती की।

चुनौतियाँ एवं संघर्ष- हालांकि संगीत उद्योग में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है फिर भी उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी उन्हें लैंगिक भेदभाव, असमान अवसर और सामाजिक पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है। पुरूषों के मुकाबले महिलाओं को अपनी प्रतिभा साबित करने के लिये काफी मेहनत करनी पड़ती है। कार्यस्थल की सुरक्षा, समान वेतन, सम्मान, सीमित प्रतिनिधित्व, आदि कई चुनौतियों का सामना उन्हें हर दिन करना पड़ता है। इन सब के बावजूद भी महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। जब महिलाएँ संगीत के माध्यम से अपनी आवाज उठाती हैं, तो वे सामाजिक मुद्दों, महिलाओं के अधिकारों और समानता के संदेश को भी आगे बढ़ाती हैं।

निष्कर्ष- भारतीय संगीत में प्रसिद्ध महिला कलाकारों का विकास दृढ़ता की कहानी है। संगीत के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती जा रही है। हम कह सकते हैं कि संगीत उद्योग में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी है। समय

के साथ-साथ समाज की सोच में बदलाव आया है यदि उसे समान अवसर, सम्मान और समर्थन मिलता रहे तो वे संगीत उद्योग को और भी समृद्ध बना सकती है।

इस प्रकार संगीत उद्योग में महिला कलाकारों की बढ़ती भागीदारी न केवल कला के विकास के लिये महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज में समानता और सशक्तिकरण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है। तमाम बाधाओं के बावजूद महिलाओं ने रचना, अध्यापन और प्रदर्शन के क्षेत्र में अपनी जगह बनाई है। उनको उपलब्धि धीरे-धीरे मिली लेकिन उन्होंने आने वाली पीढ़ी के लिये एक नया मार्ग प्रशस्त किया है।

यह आवश्यक है कि समाज और उद्योग मिलकर महिलाओं को समान अवसर, सुरक्षा और सम्मान प्रदान करे। जब महिलाओं को बराबरी का मंच मिलेगा, तब संगीत उद्योग और भी समृद्ध, विविध और सशक्त बनेगा।

सुरों की बहती कलकल नदी सी तुम,
हर लहर में तान कहती सी तुम।
वीणा की झंकार में भावों का संसार बसाये,
हर राग के, हर गीत में रची बसी सी तुम।
अपना समर्पण, प्रेम और भक्ति झलकाती हो,
संगीत ने हर सितारे में चमचमाती सी तुम।
स्वर, लय, भाव बिना, संगीत संसार नहीं,
हर धुन, हर आवाज में सुरों की रानी सी तुम।